



VAAGDHARA

## आषाढ़ मए थाए गाज ने विज किसानों हमबारो खातर अने बीज



प्यारे अदिवासी किसान  
भाइयो-बहनों, प्यारो बच्चो, युवाओं  
जय गुरु !!!

आने वाली फसल के लिए आपको शुभकामनायें कोरोना की महामारी का जो दौर शुरू हुआ था अब वह हमारे वागड़ अंचल से कम हुआ है और हम राहत की सांस लेने लगे हैं जो सरकारी बंदिशें थी वो भी अब कम होनी शुरू हो गई है ।

मैं इस मौके पर एक बात बताना चाहूँगा। मेरी चर्चा हो रही थी कुछ अधिकारियों के साथ, उन्होंने कहा की लॉकडाउन खुलने पर आपको क्या फर्क पड़ेगा, तब मैं हँसते हुए बोला की हमारे लिए तो हमेशा लॉकडाउन खुला हुआ ही है क्योंकि हम हमारे क्षेत्र में तो हमारा सामान, हमारी वस्तुएँ हमारे पास होती है। हमारी खेती के लिए हमें काम करने से कौन रोक सकता है, हमारे काम पर जाने की कौनसी रोक थी तभी तुरंत उन्होंने प्रश्न किया की ऐसा था तो आप महामारी को लेकर इतने डरे हुए क्यों थे । आपका ऐसा मानना क्यों था की आजीविका का इस पर प्रभाव होता है। उनका यह प्रश्न केवल मेरे लिए ही नहीं बल्कि सभी के लिए था । महामारी या कोई लॉकडाउन में भी हम अगर हमारे स्वराज की बात करें तो हम कम से कम इस तरीके का जीवन जी सकते हैं जैसे की पर्यावरण परिवर्तन जिसमें मौसम की बात होती है तो बारिश का कम होना या ज्यादा होना , गर्मी का ज्यादा या कम होना, ठण्ड का ज्यादा या कम होना इन सारी परिस्थितियों में हम हमारे स्वराज का ऐसा जीवन जिये की हमें नुकसान कम से कम हो और हमारे परिवार को कम से कम तकलीफ हो।

तो उसके लिए महत्वपूर्ण है हमारा प्राथमिक विषय जो की हमारी कृषि है । हमारी कृषि के साथ हम किस प्रकार का तारतम्य बिठाये ये जरूरी हैं ।

जब मैं कृषि करता था तब मैं अलग अलग खेती करता था उसमें तीन प्रकार की मक्का करता था । दलहन की फसल भी एक नहीं करता था वो भी दो-तीन प्रकार की करता था ताकि अगर अधिक बारिश में पकने वाली फसल है तो बारिश ज्यादा होगी तो पक जाएगी और कम बारिश वाली फसल है तो भी पक जाएगी। यह पर्यावरण के आधार पर की जाने वाली कृषि कही जाती है और हमारे बाप दादा तो जानते थे की किस में पानी कम चाहियें और किस में ज्यादा चाहियें । हम सभी प्रकार की फसले लगाकर हमारे होने वाले नुकसान से बच सकते हैं क्योंकि यह हमारा कृषि बीमा है अगर आप स्वराज के बीमों की बात करते हो तो हम किसी एक व्यक्ति पर निर्भर नहीं है हमारे वागड़ी में कहावत है की “ भरोसा नी भै पाड़ो जणो “ यानी की हम किसी के भरोसे रहेंगे तो हो सकता है हमारा नुकसान हो, इसलिए हमें किसी के भरोसे नहीं रहना है।

मैं आपसे आग्रह करना चाहूँगा कृषि के विषय में की हम हमारे फसलों का चुनाव और चयन इस प्रकार से करें की हमारा कम से कम नुकसान हो क्योंकि आगामी समय फसल बुवाई का है और समय रहते बरसात कम हो रही है तो हम दूसरे कृषि कार्य कर ले ताकि जो फसल का चक्र है उसके लिए यह समय हमारे लिए खराब ना जाये । इसी कड़ी में आपसे निवेदन करना चाहूँगा की हम हमारे बच्चों के लिए जिस प्रकार से वैज्ञानिक बता रहे है की संभावित कोरोना की तीसरी लहर बच्चों को प्रभावित करेगी तो हम सभी की जिम्मेदारी है की हम हमारे बच्चों को कुपोषण से बचा के रखे सबसे पहले जन्म होते ही नवजात को माँ का पहला गाढ़ा दूध पिलाये जो बच्चे के सुरुआ कवच के रूप में कार्य करेगा साथी छःमाह तक बच्चों को सिर्फ माँ का दूध ही पिलाये, इसी के साथ माँ को पोष्टिक खाना खिलाये । इससे ऊपर के बच्चों को घर का खाना खिलाये स्थानीय सब्जी एवं फलों का सेवन करायें और किस प्रकार से स्थानीय प्रयास के द्वारा कुपोषित बच्चों को सुपोषित कर पाए यह जिम्मेदारी भी हम अपने परिवार की, फले की, गांव की पूरी तरह से निभाए ताकि कोरोना की अगली लहर हमारे वागड़ को, जनजातीय क्षेत्र को ग्रसित न कर पाए और अंत में यही कहना चाहूँगा की सरकार के साथ जुड़ करके हमारे विकास के आयामों को पूरा करें । पंचायतो में भागीदारी, बच्चों का शिक्षा में नामांकन, कोरोना के टीके में हमारी भागीदारी इस विषय पर भी हमको, संगठनों को, स्वराज मित्रों को , सहजकर्ता को कदम से कदम मिलाकर चलना होगा और हमारे स्वराज की परिकल्पना को साकार करना होगा।

आपका अपना  
जवेश जोशी



जुलाई, 2021

# फलदार पौधों के लिए तैयारी करना

जुलाई के महिने का फसलों की दृष्टिकोण से एक विशेष महत्व है । क्योंकि जुलाई का महिना जिसे आषाढ़ श्रावण भी कहते है । एक लम्बी गर्मी या सूखे मौसम के पश्चात् तपती हुई धरती को शीतलता प्रदान करने के लिए मानसून लेकर आता है व पेड़ पौधे प्रकृति को आशीर्वाद स्वरुप वर्षा के जल की प्राप्ति होती है । वर्षा के पश्चात सारे खेत - खलिहान हरियाली से भर उठते है । फल वाली फसलों में अनेक कृषि गतिविधियां जुलाई के महीने में की जाती है । जैसे अनेक फल – पौधे की रोपाई,बीज – पौधे के बीच बूवाई, जल निकास की व्यवस्था, उर्वरक प्रबंधन,खरपतवार नियंत्रण, अन्तर्वर्ती फसलों की बुवाई , फल-पौधों में कटिंग , बन्डिंग, कलम को बाँधने का काम , बरसात के मौसम में लगने वाले कीट व रोगों पर नियंत्रण आदि कार्य किये जाते है ।

फलदार पौधे लगाने से पहले अपने खेत का चयन महत्वपूर्ण है । पहले जगह का चयन करें और फलदार पौधे कहाँ लगा रहे है , उसका ध्यान दे । कभी भी बड़े पेड़ के पास या उसके नीचे फलदार पौधे नहीं लगाने चाहिए क्योंकि ऐसी जगह पर उस पौधे का विकास नहीं होता । तो फलदार पौधे लगाने का सही स्थान चयन करके उस जगह पर यदि आप आम, अमरुद, निम्बू, आंवला लगाना चाहते है तो आपको उस पौधे की दूरी 8 से 10 मीटर रखना आवश्यक है । और उन पौधों के लिए 3 X 3 फिट का गड्ढा तैयार करना आवश्यक है । यदि आप अनार, जामुन, कटहल, सीताफल जैसे पौधे लगाना चाहते है तो उसमें 5 से 7 मीटर का अन्तर रखना आवश्यक है । और उन पौधों के लिए 2 X 2 फिट का गड्ढा रखना आवश्यक है । आपके खेत में फलदार पौधे लगाने के लिए उचित दुरी के साथ अप्रैल-मई माह में उचित आकार के गड्ढे तैयार करना जरूरी है । पौधे लगाने से पहले गड्ढे तैयार करने का कारण जमीन में 3 फिट तक जो पत्थर-कंकड़ होंगे उसको निकाल कर उपजाऊ मिट्टी भर सकते है ।

तैयार गड्ढों को एक माह तक धुप में रखना आवश्यक है जिससे दीमक और नुकसान दायक कीड़ों का प्रकोप दूर कर सकते है । यदि आपने अप्रैल और मई माह में गड्ढे तैयार नहीं किये है और पौधे लगाना चाहते है । तो गड्ढा तैयार करके उसमे कचरा डालकर आग लगा सकते है । तो उससे भी लाभ हो सकता है ।

**गड्ढा खोदने का तरीका :-** फलदार पौधों का गड्ढा करने का तरीका यह है कि आप अपने खेत पर समान अन्तर पर लेकर 3X3 फिट का गड्ढा तैयार करें। गड्ढा खोदते समय उसके तीन भाग करने है । उसमें उपरी 1 फिट की मिट्टी जो उपजाऊ है उसको अलग रखना है । बीच की 1 फिट की मिट्टी को दूसरी तरफ इकट्ठा करना है । लास्ट में तीसरी 1 फिट की मिट्टी तीसरी तरफ इकट्ठा करनी है ।(सभी मिट्टी में अलग-अलग अन्तर होना चाहिए । लास्ट में 1 फिट मिट्टी में हो सकता है । पहाड़ी जमीन है तो पत्थर –कंकड़ ज्यादा हो सकते है उसकी जगह उपजाऊ मिट्टी का प्रयोग करना है ।

**गड्ढा भरने का तरीका :-** फलदार पौधों के लिए जो आपने गड्ढे किये है उसको बारिश होने से पहले भरना आवश्यक है । तभी तो फलदार पौधों की बढ़ोतरी के साथ

समय पर फल आ सकते है । गड्ढा भरते समय आपके घर में उपलब्ध गोबर का एक टोपला सड़ी हुई गोबर की खाद और गड्ढे में एक किलो नीम की निमोड़ी कूटकर डालना आवश्यक है जिससे दीमक के प्रकोप से बचा जा सकता है

सर्वप्रथम उपरी सतह वाली 1 फिट मिट्टी और गोबर की सड़ी हुई खाद को मिलाकर भरना है । इसके बाद दुसरे फिट की मिट्टी में 500 ग्राम नीम की निमोड़ी कूटकर एवं गोबर की खाद मिलाकर 2 फिट तक गड्ढा पूर्ण करना है । लास्ट में उपर की 1 फिट की मिट्टी बची हुई है उसमे यदि पत्थर या कंकर हो तो उपजाऊ मिट्टी के साथ बची हुई नीम की निमोड़ी और गोबर की खाद के साथ जमीन लेवल से ऊपर 4 इंच तक गड्ढा भरकर बीच में लकड़ी की खूंटी लगा लेना है जिससे पौधा लगाते समय ध्यान रहे कि अपने गड्ढे में बीच वाली जगह कौनसी थी । उपरोक्त आधार पर गड्ढा भरकर तैयार कर देना है ।

**पौधे लगाने का समय :-** वैसे फलदार पौधे का सही वक़्त जुलाई मध्य से अगस्त के बीच है । यदि आप उपरोक्त बताई गई विधि के आधार पर तैयारी करोगे तो पौधे सूखने की गुंजाइश कम हो जाएगी । साथ में पौधों को भरपूर पोषक तत्व मिलेगा । यदि आप तुरंत गड्ढा खोदकर पौधा लगाओगे तो पौधे की पर्याप्त बढ़ोतरी नहीं होगी और सही तरीके से पोषक तत्व नहीं मिल पायेगा । पर्याप्त पोषक तत्व नहीं मिलने से पौधे बीमारी की चपेट में आ सकते है । और सूखने के आसार ज्यादा रहेंगे ।

**पौधे लगाने का तरीका :-** फलदार पौधा तब लगाना चाहिए जब 2-3 बारिश हो जाये और 3 फिट का गड्ढा पूरा पानी में भर जाये लगभग जुलाई के अंत तक अगस्त के प्रथम सप्ताह में पौधा लगाना चाहिए । पौधा लगाने से पहले पौधे कि पौलिथिन के नाप का गड्ढा करना है । पौलिथिन को ब्लेड से काटना है । जिससे जड़ो पर नुकसान न पहुंचे । फिर दोनों पैरों से मिट्टी को दबा देना है ताकि हवा निकल जाये । इसके बाद थोड़ा पानी छिड़कना आवश्यक है । इस तरह फलदार पौधे लगाकर पौधों के दोनों तरफ लकड़ी की स्टिक लेकर बाँध देना चाहिए । ताकि हवा आने से पौधों को नुकसान नहीं पहुंचे और पौधा सुरक्षित रहे ।

पौधे का रख –रखाव एवं देखभाल :- सभी किसान भाई ध्यान रखे कि जो फलदार पौधे लगाये गए है , उस खेत में बड़ी ऊंचाई वाली फसल नहीं करनी चाहिए । ताकि पौधों को पर्याप्त मात्रा में हवा एवं रोशनी मिल सकें । और बारिश में खरपतवार निकालकर थावला बनाना जरूरी है , ताकि पौधों के अन्दर बारिश का पानी जा सकें । फसल काटने के बाद गर्मी के मौसम में त्रुँ के प्रकोप एवं खुले चरने वाले पशु से बचाने के लिए कपली बनाना आवश्यक है । खास करके गर्मी के दिनों में हर सात दिनों में पानी पिलाना एवं पौधो का देखरेख करना अति आवश्यक हैं ।

पी .एल . पटेल

कार्यक्रम प्रभारी

खेती एवं पोषण कार्यक्रम



# कोरोनाकाल और सामुदायिक स्तर पर शिक्षा की पहल

पिछले एक से भी अधिक वर्ष के समय ने पूरे मानव जीवन को छिन्न-भिन्न कर रखा है । वर्तमान काल में कोविड 19 के कारण चल रही विषम स्थितियों के बारे हम सभी जानते हैं ।

पिछले वर्ष यानि 2020 मार्च में अचानक ही कोविड 19 के रूप में ऐसा दौर आया कि दुनिया में सभी लोगों की दुनिया अपने घर की चारदीवारी में सिमट कर रह गयी । हमारे बच्चों के जीवन पर भी बुरा असर देखने को मिला उनका बचपन घरों में कैद था । लॉकडाउन के चलते जब सभी बच्चे अपने घरों में बंद थे तो बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात तो दूर जीवन बचा पाना काफी मुश्किल हो गया था ।

ऐसी विकट परिस्थितियों में बच्चों के लिए शिक्षा को लेकर अलग-अलग तरह के प्रयासों का बोलबाला चहुँओर सुनाई पड़ रहा था । जिसमें ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से बच्चों का सीखना सिखाने की चर्चा जोरशोर से सुनाई दे रही थी और बहुत सारे साझे प्रयास इस ओर किये भी जाने लगे। जबकि धरातल के आंकड़े कुछ ओर ही बयान करते है इनको थोड़ा समझने का प्रयास करें तो कुछ अलग ही परिदृश्य बनता है ।

**‘मानव संसाधन विकास मंत्रालय’** ‘स्कूल शिक्षा और साक्षरता’ के दिशा निर्देशों के अनुसार ‘आउट ऑफ स्कूल’ की परिभाषा देखें तो भारत में 33 लाख विद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चे



इस वक्रत ‘आउट ऑफ स्कूल’ की श्रेणी में रखे जा सकते थे । ये सभी बच्चे शिक्षा के अधिकार से भी वंचित रहे जबकि इस अधिकार को निशुल्क प्रदान करने का दायित्व राज्य का है। कोविड 19 महामारी के दौरान राज्य सरकार ने ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा के डिजिटल माध्यमों को एक विकल्प के रूप में चुना ।

जबकि नीति आयोग के एक सर्वे (2017-18) के अनुसार मात्र 14.9 प्रतिशत ग्रामीण और 42 प्रतिशत शहरी परिवारों के पास इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध है और मात्र 4.4 प्रतिशत ग्रामीण और 32.4 प्रतिशत शहरी परिवारों की पहुँच कंप्यूटर तक है । देश में लगभग 55000 गाँव ऐसे हैं जो मोबाइल नेटवर्क से बाहर है ।

भारत में स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या करीब 33 करोड़ है इनमें से सिर्फ 10.3 प्रतिशत के पास ही ऑनलाइन पढ़ने की सुविधा है जिन परिवारों में मोबाइल फोन उपलब्ध भी है तो जरूरी नहीं कि इन्टरनेट की सुविधा उनके पास हो या उपकरणों तक बच्चों की पहुँच हो ।

इस तरह से असमानता की एक बड़ी खाई हमारे सामने स्पष्ट नजर आती है । यह एक परिदृश्य है

जो कि वैश्विक महामारी के इस दौर में हमारे ही देश की एक तस्वीर बनाता है ।

‘वाग्धारा संस्था’ जो कि पिछले 2 दशकों से भी अधिक समय से आदिवासी इलाकों के साथ अपना जुड़ाव और सरोकार रखती है, का हमेशा से ही मानना है कि समाधान के लिए हम केवल अलग जगा सकते है समुदाय की पहल पर अंतिम निर्णय समुदाय को ही लेना होता है, तभी दूरगामी परिणामों के बारे में विचार किया जा सकता है।

टीम को पूरा भरोसा था कि बच्चों की बेहतरी के लिए समुदाय के साथ मिलकर जो एक शुरुआत कर पायेंगे वह जरूर ही बच्चों के जीवन में एक खास योगदान जोड़ पायेंगे । संकटकालीन घडियों में विकल्प निकाल कर बच्चों के लिए समाधान जुटाने के प्रयासों में वाग्धारा संस्था की पूरी टीम के सदस्य एकजुट होकर गहन चिंतन, मनन, विचार-विमर्श के द्वारा संथन करने में जुटे थे।

परिणामस्वरूप जो निकलकर आया कि बाहरी निर्भरता को छोड़ अपने आसपास उपलब्ध संसाधनों को काम में लेना है । अगर समुदाय से बच्चों के माता-पिता, पढ़े लिखे युवा, सामुदायिक संगठनों के सदस्य जैसे ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के सदस्य, पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति व ग्राम पंचायत के सदस्य अगर आगे आयें तो सभी के साथ मिलकर बच्चों को शिक्षित करने का काम आसानी से किया जा सकता है ।

सामुदायिक स्तर पर काम कर रही संस्था की टीम ने समुदाय को अपनी ताकत का अहसास दिलाते हुए जब यह सब साझा किया तो स्वतः ही रास्ते नजर आने लगे ।

इस दौरान समुदाय के साथ यह चर्चा की गई कि वाई सदस्य स्वयं या समुदाय के ही किसी ऐसे व्यक्ति का चयन करें जिसने बी.एड. किया हो वह बच्चों के साथ प्रतिदिन स्वयं की सुविधानुसार एक घंटे या उससे अधिक का समय शैक्षणिक गतिविधियाँ करते हुए बिता सकते है । शुरुआत में इन कक्षाओं के लिए सभी उम्र के बच्चों का स्वागत किया गया। और यह भी तय किया गया कि ये शिक्षण पाठ्यक्रम या पुस्तक पर आधारित होना अनिवार्य नहीं है, बस हम बच्चों के लिए एक ऐसा मंच तैयार कर सकें जो बच्चों के लिए उपयोगी साबित हो और यह बच्चों के लिए एक रोचक तरीके से सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बन सके। बच्चों की सुरक्षा के मद्देनजर कोविड 19 की गाइड लाइन के तहत सभी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में बुलाना एवं दूर-दूर बैठकार ही बातचीत और काम किये जाने तय किये गए ।

देखते ही देखते आनंदपुरी पंचायत समिति की पाटिया गलिया पंचायत की पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति के सदस्यों द्वारा पढ़े लिखे युवाओं का चयन कर फलां वार बच्चों को पढ़ाने की पहल की गयी । मासिक बैठक के तहत यह बहुत ही महत्वपूर्ण चर्चा का विषय बना ।

वाई पंच ने इस सोच को गंभीरता से लिया और बच्चों के लिए शिक्षा के महत्त्व को लेकर सभी ग्रामीणों को जागरूक करने हेतु ग्रामीण बैठक का आयोजन कर बच्चों के लिए शुरू की गयी इस पहल से बच्चों को जोड़ने का ग्रामीणों से आग्रह किया । इतना ही नहीं वाई पंच और शिक्षक ने घर-घर जाकर माता-पिता और बच्चों को प्रेरित करते हुए बच्चों को इस मुहिम से जोड़ने में सफलता हासिल की ।

परिणामस्वरूप यह सफल प्रयास परवाली गाँव में भी किया गया जहाँ वाई सदस्य एवं पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति सदस्य तेरसिंह के अनुरोध पर गाँव के ही बी.एड. धारक कल्पेश कुमार प्रतिदिन दो घंटे कक्षा 1 से 8 वीं के बच्चों को पढ़ाने लगे। कल्पेश कुमार ने माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के बच्चों की कक्षाएँ लेने की भी योजना बना ली ।

वाग्धारा की फोल्ड टीम ने समन्वय - समय पर इस पहल को वाग्धारा कार्यक्षेत्र के अन्य साथियों के साथ जैसे- ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति, पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति और जनजातीय स्वराज संगठनों के सदस्य आदि साझा किया । यहाँ तक कि संस्था से जुड़े सामुदायिक सन्दर्भ व्यक्ति भी बच्चों के साथ शैक्षणिक गतिविधियों के लिए समय देने लगे।

अप्रैल 2020 से लेकर फरवरी 2021 तक संस्था के सम्मिलित प्रयासों के द्वारा समुदाय स्तर पर 263 गावों से 6561 बच्चों के छोटे छोटे समूह बनाकर गतिविधि आधारित सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं से जोड़कर शैक्षणिक माहौल बनाने में सफलता हासिल की ।

फरवरी 2021 में जब कोविड 19 का प्रवाह बहुत कम हो गया अब लॉकडाउन भी धीरे-धीरे खुल कर जन जीवन सामान्य होने लगा था । तब ये सभी बच्चे चहचहाते हुए पुलकित मन से शाला परिसर

को एक बार फिर से गुंजायमान करने के लिए अपनी अपनी शालाओं की ओर वापसी कर रहे थे । शैक्षणिक संस्थान भी फिर से बच्चों को मुस्कुराकर गले लगाने को तैयार थे ।

समुदाय और वाग्धारा संस्था ने साथ मिलकर यह साबित कर दिया कि ईंसान चाहे तो कोई भी चुनौती बड़ी नहीं है और ध्यान से देखें तो हर चुनौती अपने साथ अवसर जरूर लाती है, बस जरूरत होती है तो धैर्य के साथ एकजुट होकर सामना करने की ।

समुदाय ने इस बेहतर प्रयास को काफी सराहते हुए अपने विचार व्यक्त किये हैं

- मैंने 6 से 14 वर्ष की उम्र के छोटे बच्चों को अपने घर पर बुलाकर सोशल डिस्टेंस का ध्यान रखते हुए शिक्षा के स्तर को वापस बेहतर करने के लिए एक प्रयास किया जिसके लिए मुझे बहुत खुशी है ।

अनिल गरासिया, पंचायत समिति : गागड़ तलाई वाग्धारा

- कोरोना की इस महामारी के समय कक्षा 1 से 8 तक के 20 -25 बच्चों को मैंने अपने घर पर प्रति-दिन 1 घंटा से अधिक समय तक पढ़ाया व अभ्यास करवाया गया ।

सरस्वती बेन पारगी सहजकर्ता, वाग्धारा पंचायत समिति, फतेहपुरा ( गुजरात )

- बच्चे मेरे पास खुशी से पढ़ने आते थे, मैं भी बच्चों को हर रोज दो घंटे पढ़ाया करती थी । जिससे



बच्चों में भी पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रही।

कैलाश बेन गरासिया सहज कर्ता, वाग्धारा पंचायत समिति: झालोद

- राजेश जी ने हमारे बच्चे को पढ़ाने के लिए हमसे सहमति ली और हमारे बच्चों को निस्वार्थ भावना से पढ़ाया इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद इनकी मेहनत से बच्चों की शिक्षा का स्तर अच्छा रहा । और बच्चों को भी पढ़ाई में रूचि बढ़ी ।

मनोज भाई सुबेर ( अभिभावक ) JSS सदस्य

- कैलाश बेन ने बच्चों को अपनी इच्छा से पढ़ाने का निर्णय लिया जो बहुत ही सराहनीय है । इन्होंने निस्वार्थ भावना से बच्चों को पढ़ाया और शिक्षा के स्तर को बढ़ाया ।

कविता बेन गरासिया ( अभिभावक ) गाँव: हुडी कंसरिया

मधु सिंह - असिस्टेंट प्रोग्राम फैसिलिटेटर ( सच्चा बचपन )

शेष पेज 2 पर





## सच्चा बचपन : कोरोना के दौर में बच्चों की शिक्षा की सुनिश्चितता में अभिभावक व समुदाय की भूमिका...

**प्रिय साथियों और प्यारे बच्चों आप सभी को मेरी तरफ़ से जय गुरु !**

उम्मीद करता हूँ की आप सभी अपने अपने परिवार के साथ स्वस्थ होंगे और एक दुसरे का ख्याल भी रख रहे होंगे। जैसा की आप सभी को पता है की कोरोना की दूसरी लहर छलान पर है, लेकिन इससे उपजी परिस्थितियों ने एक डर और असुरक्षा की जो भावना आम जनमानस में भर दी है उससे कैसे निजात पाया जाएगा, यह समझ से परे है। लोगों ने अपने परिवार के सदस्यों को तो खोया ही है, साथ ही आर्थिक व सामाजिक परिवेश भी गड़बड़ा गया है। कोरोना की पहली लहर गाँवों तक न पहुँचने के कारण जो सुरक्षा की भावना थी, उसे भी दूसरी लहर ने तोड़ कर रख दिया है।

पिछले तीन महीनों में कोरोना की दूसरी लहर ने हम सबको बहुत ही बुरी तरह से प्रभावित किया था और हमारे जनजातीय समुदाय भी इससे खुद को सुरक्षित नहीं रख सका। अब जहाँ एक तरफ़ इस दूसरी लहर पर काबू पाया है जिससे हालात सामान्य हो रहे है और दोबारा से जनजीवन पटरी पर लौट रहा है, लेकिन अभी भी कोरोना पूरी तरह से गया नहीं है एवं जैसा की देश व दुनिया के कई सारे स्वास्थ्य विशेषज्ञ और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पहले ही सभी को सचेत किया है की इस साल के आखिरी में कोरोना की तीसरी लहर वापस से हमला कर सकती है, जिसमें सबसे ज्यादा बच्चों के प्रभावित होने की सम्भावना भी जताई गयी है। इसलिए साथियों में एक बार फिर से आप सभी से निवेदन करना चाहता हूँ की हम सभी पहले से ही अपने बच्चों को तीसरी लहर से बचाने के लिए पूर्व तैयारी करने और सतर्क रहने की जरूरत है।

गाँव में जब समुदाय में किसी सर्वे कार्य के दौरान या फ़ोन पर चर्चा होती है तो एक चिंता और भय सभी के चेहरों पर दिखाई देता है, और सभी का सवाल यही होता है की कब सब पहले जैसे सामान्य होगा ? कब तक ऐसा ही चलेगा ? और इन सवालों के साथ ही अगला सवाल होता है की विद्यालय कब खुलेंगे ? यह चिंता अभिभावकों और बच्चों के चेहरे पर साफ़ दिखाई देती है। बाल पंचायत के बच्चों के भी यही सवाल होते है की हमें कब वापस से विद्यालय जाने को मिलेगा ?

शिक्षक, अभिभावक और बच्चें सभी की पढ़ाई कैसे होगी ? इसके लिए चिंतित है। कोरोना की तीसरी लहर की चेतावनी के बीच विद्यालय खुलने की संभावना नजर नहीं आ रही है। ऑनलाइन माध्यम से बच्चों के साथ काम करना गाँव में मोबाइल और नेटवर्क की सीमित उपलब्धता को देखते हुए संभव नही है। लेकिन बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया जारी रखनी है, इसके लिए गत सत्र में किये गये काम को एवं विभाग द्वारा निर्धारित कामों को आधार बनाना होगा जिसमें समुदाय की भूमिका को भी तय करने की जरूरत है। ताकि उक्त परिस्थिति के कारण सीखने की प्रक्रिया में जो कमी आई है उसको किसी हद तक दूर किया जा सके। इसी को ध्यान में रखते हुए इस नवीन सत्र 2021-22



## ‘हंसती खेलती दुनिया में अब हो गया अंधेरे का साया! प्रशासन तक सुनने वाला कोई नहीं, चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा बना मददगार’

आज से करीब 6 वर्ष पूर्व दीपक गार्डनर पेरो से वाहन चालक था अच्छे अच्छे अधिकारी कर्मचारी जनप्रतिनिधियों की वाहन चालक के रूप में सेवा करता था। परंतु उसको क्या मालूम था कि जीवन में ऐसा मोड़ आएगा जहां पर उसकी हंसती खेलती दुनिया में अंधेरे का साया आ जाएगा। दीपक गार्डनर का अहमदाबाद में एक्सीडेंट हो गया परिवार में पत्नी एवं पीछे चार बालक बालिकाएं घर के हालात इतने खराब थे कि बांसवाड़ा जिले में निवास करते करते 30 वर्ष से ऊपर गुजर गए परंतु किराए के मकानों में जिंदगी गुजार रहे हैं। पिता भीलवाड़ा के मूल निवासी थे यहाँ नौकरी करते थे।वह अब इस दुनियां में नहीं रहे। भाई भीलवाड़ा वापस चले गए और दीपक अपना परिवार बसा कर यही रहने लगा। क्या करें ज़िंदगी में जब समय करवट लेता है तो किसी का नहीं होता, यही कहावत दीपक के साथ सत्य हो रही थीं परंतु इसके साथ.साथ सरकार भी नहीं सुने तो मनुष्य कहीं का नहीं रहताए दीपक

## कचनार एक औषधीय पौधा

प्रकृति ने कई पेड़ पौधों को औषधीय गुणों से भरपूर रखा है।

इन्हीं में से एक कचनार का पेड़ भी है जो अधिकतर कंडी क्षेत्र में ही पाया जाता है। मार्च मध्य के बाद फूलों से लदने वाले इस पेड़ की पत्तियां, तना व फूल आदि सभी उपयोगी हैं। कचनार की गणना सुंदर व उपयोगी वृक्षों में होती है।इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से गुलाबी कचनार का सबसे ज्यादा महत्त्व है। कचनार के फूलों की कली लंबी, हरी व गुलाबी रंगत लिए हुए होती है। आयुर्वेद में इस वृक्ष को चमत्कारिक और औषधीय गुणों से भरपूर बताया गया है। कचनार के फूल और कलियां वात रोग, जोड़ों के दर्द के लिए विशेष लाभकारी हैं। इसकी कलियों की सब्जी व फूलों का रायता खाने में स्पाइस्ट और रक्त पित्त, फोड़े, फुंसियों को शांत करता है।

**कचनार के गुण** – कचनार के फूल थायराइड की सबसे अच्छी दवा हैं।

• गले में गांठे हो गई हों तो कचनार की छाल को चावल के धोवन में पीसिए, उसमें आधा चम्मच सौंफ का पाउडर मिलाकर खा लीजिए।

• बवासीर में कचनार की कलियों के पाउडर को मक्खन और शक्कर मिलाकर 11 दिन खाएं और आंतों में कीड़े हों तो कचनार की छाल का काढ़ा पिएं।

• लिवर में कोई तकलीफ हो तो कचनार की जड़ का काढ़ा पिएं।

• गले की कोई भी ग्रंथि बड़ जाने पर कचनार के फूल या छाल का चूर्ण चावलों के धोवन में पीस कर उसमे सेंट मिलाकर लेप भी



किया जा सकता है और पिया भी जा सकता है।

• कचनार की टहनियों की राख से मंजन करेंगे तो दांतों में दर्द कभी नहीं होगा, अगर हो रहा होगा तो खत्म हो जाएगा।

• खून शुद्ध करने के लिए कचनार की कलियों का काढ़ा पी सकते हैं।

• मुंह में छाले होने पर कचनार की छाल का काढ़ा बनाकर उसमें थोड़ा सा कथ्था मिलाकर छालों पर लगाने से आराम मिलता है।

• पेट में गैस होने पर कचनार की छाल का काढ़ा बनाकर, इसके 20 मिलीलीटर काढ़ा में आधा चम्मच पिसी हुई अजवायन मिलाकर प्रयोग करने से लाभ मिलता है। सुबह-शाम भोजन करने बाद इसका सेवन करने से पेट फूलना व गैस की तकलीफ दूर होती है।

• जीभ व त्वचा के सुन्न होने पर कचनार की छाल का चूर्ण बनाकर 2 से 4 ग्राम की मात्रा में खाने से इस रोग में लाभ होता है। त्वचा की सुन्नता दूर होती है।

**कचनार** : शोथ एवं ग्रंथिनाशक

शरीर में कहीं शोथ हो, गांठ हो या लसिका ग्रंथि में कोई विकृति हो तो इसे दूर करने में जिस जड़ी-बूटी का नाम सर्वोपरि है वह है कचनार। इसके अद्भुत गुणों के कारण संस्कृत भाषा में इसे गुणवाचक नामों से सम्बोधित किया गया है यथा- गण्डारि यानी चमर के समान फूल वाली, कौविदार यानी विचित्र फूल और फटे पत्ते वाली आदि। आज किसी को शरीर में कहीं गांठ हो जाती है तो वह चिंतित व दु:खी हो जाता है, क्योंकि उसे कचनार

हालातों में गुजर रहा होगा उसका अंदाजा लगाना बहुत ही कठिन होगा। सूचना मिलने पर वाग्धारा संस्था द्वारा संचालित चाइल्ड लाइन 1098 टीम मौके पर पहुंची एवं समस्त प्रकार की जानकारी ली



। जिला समन्वयक परमेश पाटीदार के द्वारा बताया गया कि वास्तव में जमीनी हकीकत मालूम पड़ी तो परिवार बहुत ही गरीब एवं ज़रूरतमंद है जिस पर शुरुआत में ही वाग्धारा संस्था के माध्यम से

एक माह का राशन उपलब्ध करवाया गया साथ ही टीम द्वारा परिवार की जिम्मेदारी लेते हुए समस्त प्रशासनिक अधिकारियों को इस पीड़ित परिवार के बारे में बताया जिसमे बालक कुलदीप का दिव्यांग प्रमाण नहीं बना है ना कोई मेडिकल से सुविधा मिल रही है। साथ ही साथ पिता का भी दिव्यांग प्रमाण पत्र नहीं बना है जिस कारण उनको भी किसी भी प्रकार की पेंशन और अन्य लाभ भी नहीं मिल रहे है सरकार इनकी तरफ देखती एवं उनके कार्यों को करती तो आज इस परिवार की हालत इतनी दयनीय नहीं रहती क्योंकि राज्य सरकार की योजनाएं अनेको है अगर पालनहार एवं पेंशनन से जोड़ दिया जाता तो इस परिवार की आर्थिक स्थिति और मजबूत हो सकती थी आज इस परिवार की हालत इतनी खस्ता नहीं होती। अंदाजा तो इस बात से लगाया जाता है कि परिवार का भार परिवार की माता पर आ गया जो रोते हुए बताती है कि क्या करें भगवान के आगे मजबूर हैं। मैं ध्धर उधर घर का

खाना बना कर घर का गुजारा करती हू। जिस पर टीम द्वारा ढाढस बंधाया गया की हम आपके सभी कार्य प्रशासन के सहयोग से करवाने का भरोसा देते है। आपके परिवार को पालनहार एवं दिव्यांग पेंशन से जोड़ा जाएगा। माया ने मासिक खर्च के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी जिसमे महीने के तीन हजार मकान किराया, लाइट बिल भरना, दवाइयों एवं अन्य खर्च भी है टीम द्वारा प्रयास करते हुए बालक कुलदीप का दिव्यांग प्रमाण पत्र जारी करवा कर पेंशन से जोड़ा गया, पिता जी का भी प्रमाण पत्र जारी करवाकर पेंशन से जोड़ा गया तथा परिवार को उज्ज्वला गैस कनेक्शन से भी जोड़ा गया जिस पर परिवार ने चाइल्ड लाइन 1098 को बधाईयाँ दी।

**कमलेश बुनकर**  
**कान्तीलाल यादव**  
**बसुड़ा कटारा**  
**शोभा सोनी**  
चाइल्ड लाईन टीम सदस्य

के प्रारंभ से ही विधार्थियों के सीखने और समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए एवं उत्पन्न लर्निंग गैप्स की क्षतिपूर्ति की दिशा में सुनियोजित व कार्मिक कार्ययोजना का निर्माण किया गया है, जिसके अनुरूप शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया जा सकेगा।

साथियों अब मैं, इस अंक के माध्यम से आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा की जैसा आप सभी जानते है की इस कोरोना महामारी ने हमारे बच्चों के दो शैक्षणिक सत्रों को बहुत ही बुरी तरह से प्रभावित किया है और गत सत्र में तो सरकार को कक्षा 10वीं व 12वीं बोर्ड की परीक्षाएँ भी निस्त करने पड़ी और बच्चों को सीधे अगली कक्षा में प्रवेश दे दिया गया, ऐसा नहीं है की सरकार ने परीक्षाएँ करवाने का प्रयास नहीं किया हो, सरकार ने आखिरी समय तक पूरा प्रयास किया की कैसे भी करके बोर्ड की परीक्षाएँ करवाई जा सके, लेकिन कोरोना की दूसरी लहर ने ऐसा कोई मौका दिया ही नहीं।अब चूँकि जून माह से बच्चों का अगला शैक्षणिक सत्र शुरू हो चुका है, जिसके लिए सरकार द्वारा दिशा निर्देश भी जारी किये गये है की कोरोना की तीसरी संभावित लहर को देखते हुए कोई भी बच्चा विद्यालय में नही आएगा और घर से ही अपनी पढ़ाई करे। इसी को ध्यान में रखते हुए शिक्षा विभाग द्वारा सभी गाँवों में वार्ड वार सर्वे करवाया जा रहा है, जिसमे स्थानीय शिक्षक वार्ड वार धूमण कर रहे है जिसमें उनके द्वारा 0 से 18 वर्ष के समस्त बच्चों का रिकॉर्ड अपडेट किया जा रहा है, जिसमें 3 से 6 वर्ष के बच्चों की जानकारी सम्बन्धित आंगनवाडी केंद्रों में सँझा की जा रही है ताकि जो बच्चें आंगनवाडी में अनामॉकित है उनका नामांकन आंगनवाडी में सुनिश्चित किया जा सके और जिन बच्चों ने 6 वर्ष पूर्ण कर लिए है उनका नामांकन विद्यालय में कक्षा 1 में करवाया जा सके, इसी के साथ 18 वर्ष आयु तक अगर कोई ऐसे बच्चें है जो ड्रॉप आउट है उनको भी नामांकित करने की कोशिश की जा रही है, लेकिन यहाँ शिक्षकों के अलावा सबसे बड़ी भूमिका बच्चों के माता-पिता, अभिभावकों एवं समुदाय की है की शिक्षा विभाग की इस पहल में आप सभी अपनी भूमिका निभाएं ताकि सभी बच्चों का शत प्रतिशत नामांकन और वर्ष 2016-17 से सरकार द्वारा शुरू की गयी उजियारी पंचायत की पहल को भी इस प्रक्रिया के माध्यम से सुनिश्चित किया जा सके। जैसा की आप सभी को पता है की उजियारी पंचायत की पहल को शुरू करने के पीछे यही उद्देश्य था की पंचायत के अधीन आने वाले समस्त राजस्व गाँवों में 18 वर्ष आयु तक का कोई भी बच्चा ड्रॉप आउट ना रहे

| 6 से 18 साल तक के शिक्षा से वंचित बालक/बालिकाओ का सर्वे प्रपत्र सत्र 2021- 22 |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
|-------------------------------------------------------------------------------|-----------------------|-------------------|-----------------------------------|----------------|-------------|-------------|-------------|--------------------------|---------------------|------------------|----------------------------|----------------|----------------------------|----------------------|-----------------------------------------------------------|-------------|
| सर्वेकर्ता का नाम:-                                                           |                       |                   | मोबाइल नंबर:-                     |                |             | पद:-        |             |                          | संगठन:-VDCRC/SS/JSS |                  |                            | दिनांक :-      |                            |                      |                                                           |             |
| मोबाइल:-                                                                      |                       |                   | गाँव:-                            |                |             |             |             |                          | फ़ालिया :-          |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| जिला:-                                                                        |                       | ब्लॉक :-          |                                   | कंसल्टर(JSS):- |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
|                                                                               |                       |                   |                                   | JSSI:-         |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| क्र. सं.                                                                      | राशन कार्ड सं. संख्या | राशन कार्ड प्रकार | बालक/बालिका नाम                   | लिंग F/M       | जन्म दिनांक | माता का नाम | पिता का नाम | अभिभावक का नाम और रिश्ता | स्कूल नाम           | स्कूल Dis.code:- | बालक/बालिका नामांकन दिनांक | नामांकन संख्या | कोन सी कक्षा से जाए आउट है | जाप आउट होने का कारण | वर्ग (ST,SC,OBC, अन्यसंख्यक, अन्य)                        | विशेष विवरण |
| 1                                                                             |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 2                                                                             |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 3                                                                             |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 4                                                                             |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 5                                                                             |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 6                                                                             |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 7                                                                             |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 8                                                                             |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 9                                                                             |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 10                                                                            |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 11                                                                            |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 12                                                                            |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 13                                                                            |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 14                                                                            |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| 15                                                                            |                       |                   |                                   |                |             |             |             |                          |                     |                  |                            |                |                            |                      |                                                           |             |
| सहजकर्ता हस्ताक्षर                                                            |                       |                   | सत्यापनकर्ता(Cluster Facilitator) |                |             |             |             | अध्यापक हस्ताक्षर/सील    |                     |                  |                            |                |                            |                      | Activate Windows<br>Click on Settings to activate Windows |             |

है और सक्रिय रूप से अपनी जिम्मेदारी भी निभानी है। ताकि आने वाले समय में जब भी हालत सामान्य होते है और अगर सरकार विद्यालयों में बच्चों को पढ़ाने की अनुमति देती है तो हमारे बच्चों का लगाव शिक्षा से पूरी तरह से बना रहे और बच्चें खुद को शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत समझे।

**अभिभावक एवं समुदाय की भूमिका :**

बच्चों को मिलने वाले गृह कार्य को अभिभावक खुद देखकर समझे और जिम्मेदारी के साथ बच्चों को पूरा करवाने में सहयोग प्रदान करे।

बच्चों को मिलने वाली वर्क बुक को समझकर उसको पूर्ण करवाएं।

आसपास मोहल्ले में अगर कोई ऐसा बच्चा है जिसके परिवार में वाट्सअप वाला मोबाइल नहीं है उन बच्चों के साथ भी उक्त कार्य को सँझा कर उनका मार्गदर्शन करना।

अगर एक अभिभावक के एक से ज्यादा बच्चें है और सभी अलग अलग कक्षा में पढ़ते है तो अभिभावक आपस में जिम्मेदारी तय कर सभी बच्चों के गृह कार्य पूर्ण करवाने में सहयोग प्रदान करे।

गाँव के युवाओं के साथ मिलकर रोजाना दो से तीन घंटे के लिए मोहल्ला वार कक्षाएं आयोजित करवाने में सहयोग प्रदान करावें और उसमे स्थानीय शिक्षक को भी शामिल करे।

सामुदायिक संगठनों के साथ चर्चा कर अलग अलग मोहल्लों में दो से तीन पक्के कारों की बाहर की दीवारों पर ग्रीन बोर्ड बनाकर उन पर विषयवार शिक्षण सामग्री लिखना एवं उन पर बच्चों के साथ कार्य करना।

विद्यालय से टी.एल.एम. किट को बच्चों के बीच लाकर उस पर बात करना और उसके कार्यपत्रक बनाकर बच्चों से भरवाना।

बच्चों को जो भी शैक्षणिक कार्य करवाया जा रहा है अभिभावक स्वयं उसका पाक्षिक आंकलन करे एवं आंकलन के आधार पर सम्बन्धित बुनियादी कौशलों पर स्थानीय शिक्षक के साथ मिलकर कार्य योजना बनाकर उनका उपचारात्मक शिक्षण करवाना सुनिश्चित करावें।

बच्चों की कक्षा या स्तरानुसार हिंदी, अंग्रेजी, गणित विषय के चार्ट तैयार कर प्रत्येक बच्चें के साथ उन पर चर्चा करना और चार्ट पेपर के माध्यम से उनको पढ़ाना।

तो दोस्तों अंत में,आप सभी से इस पत्रिका के माध्यम से यही निवेदन करना चाहूँगा की इस कोरोना महामारी के दौर में अपने बच्चों की शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए आप सभी को स्थानीय शिक्षकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने की जरूरत है, ताकि बच्चों का शिक्षा के साथ जुड़ाव बना रहे और बच्चें पुरे आनंद के साथ में शैक्षणिक गतिविधियों में अपनी पूरी भागीदारी निभाएं।

**माजिद खान**

बाल अधिकार, कार्यक्रम प्रभारी





अंक 14

जुलाई, 2021

3

# वन महोत्सव, वन का महत्व एव वन सरंक्षण समिति के कार्य

**वन महोत्सव दिवस**

वन महोत्सव कार्यक्रम 1 जुलाई से 7 जुलाई तक वन महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। ऐसे तो हम बहुत से त्यौहार मनाते है लेकिन जब बात आती है पृथ्वी को बचाने की तो ऐसे त्यौहारों की संख्या बहुत कम है। वन महोत्सव एक बहुत ही महत्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है। यह एक ऐसा त्यौहार है जो जुलाई के महीने में आता है। लोगों ने वन महोत्सव को काफी गंभीरता से लेना शुरू कर दिया है। वर्तमान समय में भी राजस्थान के दक्षिणी भाग के बाँसवाड़ा जिले में वाग्धारा संस्थान के द्वारा जनजातीय विकास मंच जिलास्तर, ब्लॉक स्तर एवं ग्राम स्तर तक गठित संगठन, समितियों के माध्यम से जनजातीय समुदायों में वनों को जीवित रखने के लिए समय समय पर फलदार पौधो का वितरण कर एवं ग्राम स्तर पर ही नर्सरी तैयार करवाकर 1000 गांवों में एक लाख परिवारों तक फलदार पौधे प्रत्येक सक्षम समूह के सदस्य, स्वयं सेवक, ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति,जनजातीय स्वराज संगठनो के सदस्यों एवं जनजातीय विकास मंच के सहयोग से प्रत्येक परिवारमें फलदार पौधे उपलब्ध करवाये जा रहे है जिससे उस परिवार को फल मिलते रहे एवं पर्यावरण संरक्षण के साथ ही हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी वन महोत्सव दिवस/सप्ताह मनाने के लिए सभी समुदायों में लगातार प्रयत्नशील है।

**वन वयों महत्वपूर्ण है-**

एक समय था जब सुबह की शुरुआत पक्षियों की चहचाहत के साथ होती थी। घर के आंगन में गौरैया दाना चुगने आया करती। कई प्रकार के रंग बिरंगे पक्षीयों की आवाज सुनने को मिलती थी लेकिन आज हम आधुनिक बनने की होड़ में वनों की उपयोगिता को ही भूलते जा रहे हैं। बड़े बड़े शहर, हाव्हे, सड़क, यातायात, फैक्ट्रियां इत्यादि बनाने की चाहत में वनों को ही समाप्त करते जा रहे है। जिससे लाखों पशु पक्षी विलुप्त होते जा रहे है।पेड़ों की कटाई के कारण बड़ी संख्या में पशु पक्षी कीट पतंगे बेघर हो गए हैं। आज स्वच्छ हवा में सांस लेने तक को तत्स गप है। लेकिन हमारी बढ़ती लातसा के कारण शहर के बाद अब गांव पहाड़ भी वृक्षों के अभाव में जीने को मजबूर होते जा रहे है, एवं समय से पूर्व बाढ़,गर्मी, चक्रवात और अन्य प्राकृतिक आपदाओं ने अपने पैर पसारे हुए है तो कभी अंधाधुंध बारिश, कहीं सूखा पड़ रहा है। तो कई ठंड का प्रकोप बढ़ रहा है। नदी, नाले सूखते जा रहे है। इन प्रभावाों से आज जनजातीय समुदाय भी अछुता नहीं है



और जनजातीय समुदाय जो पहले वनों में ही अपना जीवन यापन करते थे, उनको बहुत सारी जड़ी बुटियो एवं लाभकारी पेड़ों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी थी जैसे: महुआ के पेड़ वषों पहले जनजातीय समुदायों के लिए वरदान साबित होते रहे है अपनी आजीविका चलाने के लिए महुआ के पेड़ो को सरक्ष्ण देते रहे है एवं ऐसे ही वनों में फलदार पोधे जिनमे जामुन, इमली, सीताफल, आम, शहतुत, आदि से फल मिलने के साथ साथ ही शुद्ध हवा मिलती रही है और जनजातीय परिवारों को कई प्रकार का कौशल ज्ञान धीरे धीरे कही न कही अब पीछे छुटने लगा है संस्थान के द्वारा पिछले 20 वर्षों के अथक प्रयास से वनों से होने वाले लाभ व जड़ी बुटियों में पारंगत ज्ञान को एक जगह संग्रहित कर समुदाय में फिर से पहुंचाने का संकल्प लेकर युवा पीढी को वनों का महत्व व लाभकारी जडी बुटियों के बारे में बताया जा रहा है। जिससे समुदायों में पराम्परागत ज्ञान ,वनों के महत्व के साथ ही अच्छा स्वास्थ्य

लाभ के लिए संगठनों के द्वारा समय समय पर जागरूकता रैलीयां निकालकर वनों का महत्व बताया जाता रहा है और लगातार प्रयत्नशील है।
**वनों का महत्व:**
मवेशियों के लिए भरपुर मात्रा में चारे की पतियां प्राप्त होती है। अधिक पेड़ लगाने से अधिक ऑक्सीजन मिलती है। पक्षियों 'व वनवरों को रहने के लिए आदर्श स्थान मिल जाता है। अधिक छायादार वृक्ष होने से गर्मी कम लगती है और तापमान स्थिर रहता है। फल और सब्जियों का उत्पादन बढ़ता है। वनमहोत्सव लोगों के बीच पेड़ों के प्रति आदर और प्यार बढ़ाने के लिए काफी सहायक है। वन प्राकृतिक संसाधन है और पेड़ पौधे वातावरण में मौजूद जहरीली गैसों को सोख लेते है। वनो से चन्दन की लकड़ियां

मिलती है। वन भूमि कटाव को रोकता है, जिससे उपजाऊ मिटटी नष्ट नहीं होती है।
**वनों की कटाई:**
पेड़ हमारे बीच उपलब्ध सबसे प्रचुर मात्रा के प्राकृतिक संसाधनों में से एक हैं। ये कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने तथा ऑक्सीजन का उत्पादन करने तथा मिटटी को एकत्रित करते है। लकड़ी प्राप्त करने के लिए जंगलों के पेड़ो का काटते है जिसके कारण वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा तथा वैश्विक तापमान में वृद्धि हो जाती है। विशाल जंगल रंगिस्तान का रुप लेते जा रहे है।
**वन संरक्षण समिती के कार्य :-**
**वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति**
**वनसुरक्षा समिति:** सघन वन क्षेत्रों में वनखंड सीमा के पांच किलोमीटर दूरी तक स्थित ग्रामों में आने वाली समितियों को वनसुरक्षा समिति कहा जाता है। यह ऐसे वन क्षेत्र है

जिनसे नियमित वानिकी कार्यों के अन्तर्गत वन उत्पाद प्राप्त किये जाते है।

**ग्राम वन समिति:** बिगड़े वन क्षेत्रों में वन खंड सीमा से पांच किलोमीटर दूरी वाला दायरा खत्म करके वन के नजदीक वाला एरिया लेना चाहिए। यह ऐसे वन क्षेत्र हैं जो जैविक दबाव के कारण विरल हो गये हैं तथा जिनका पुन:स्थापन किया जाना आवश्यक है।

**ग्राम स्तरीय वन सुरक्षा प्रबन्ध समिति के नियम:-**

प्रत्येक वर्ष में कम से कम दो बैठके होना जरूरी है, जिसमें कोसम 40 प्रतिशत सदस्यों का उपस्थित होना जरूरी है। महिला सदस्यों में कम से कम 33 प्रतिशत सदस्यों का उपस्थित होना आवश्यक होगा। एक तिहाई सदस्यों की मांग पर अध्यक्ष या सचिव इसके अलावा भी साधारण बैठक बुला सकेगें। कार्यकारिणी समिति की बैठक वर्ष में कम से कम 4 बैठके आयोजित करनी होगी, बैठक में महिला सदस्यों की उपस्थित होना अनिवार्य है। बैठक में महिला सदस्यों के द्वारा दियं गये सुझावों पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

**महिलाओं की सलाहकार उप समिति:-** प्रत्येक गांव में बनाई गयी वन सुरक्षा प्रबंधन समिति के आवश्यकता होने पर महिला सलाहकार समिति बन सकती है।

इसमें कम से कम 7 महिलाओं का होना जरूरी है। सभी सदस्य अपने में से अध्यक्ष का चयन करेंगें । उप समिति विशेषरूप से समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर उनके विचारों को कार्यकारिणी में प्रस्तुत करेगी। उप समिति के नियमित रूप से बैठक का आयोजन कर संबंधित वनपाल/वनप्रसारक पदेन सचिव भी है समिति में लिये गये निर्णयों को कार्यकारिणी के समक्ष विचार हेतु प्रस्तुत करेगा।

**ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति का स्वरूप:** प्रत्येक राजस्व ग्राम में वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति का गठन किया गया है।

ग्राम की सीमा में आने वाले सभी परिवार जो स्थाई निवासी हो तथा जिन्हे ग्राम के प्राकृतिक संसाधनो से लाभ प्राप्त करने का अधिकार एव रियायते प्राप्त है।

उनको समिति की सदस्यता प्राप्त करने का अधिकार है।

एक राजस्व गांव के लिए एक समिति बनाई गई है।

**श्रीमान् हरी किशन सारस्वत**

उपवन संरक्षक,

बाँसवाड़ा-राजस्थान

## जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

### हिरन

**!! सभी पाठक साथियों को जय गुरु !!**

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई हिरन द्वारा इस माह कोरोना लॉकडाउन के दौरान एवं लॉकडाउन खुलने के बाद कई गतिविधियों का क्रियान्वयन किया है । कोरोना की दूसरी लहर के कारण उत्पन्न परिस्थितियां काफी हद तक अब संभल चुकी है और जिन्दगी वापस पटरी पर आ चुकी है , राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना के चालू हो जाने से लोग काम पर जाने लगे है ,चौमासे की पहली बारिश भी अच्छी हो गई है और किसानो का रुख खेत एवं बाजार की ओर किसानी एवं किसानी में



### माही

**!! सब जणने मारू राम-राम !!**

साथियों विगत दो माह का दौर हमारे समुदाय के लिए बहुत ही बुरा रहा है हमने हमारे परिवार या आस पास के सदस्य कोराना के कारण हमसे बिछड गए। साथियों मेरे जनजातीय स्वराज संगठनो, ग्राम स्तरीय ग्राम स्तरीय बाल सरक्षण समिति,सक्षम समूह एवं वाग्धारा परिवार की संवेदना आपके साथ है और रहेगी साथ ही हम सब परमपिता से कामना करते है की यह समय भी जल्द निकलेगा और हम सब एक बार पुन: हमारे पुपुने रंग में लोंटेंगे परन्तु साथियों मेरे टीम के द्वारा वर्तमान में क्षेत्र भ्रमण किया जा रहा है जिसमे प्राय: देखा गया है की हम साथी लॉक डाउन खुलते ही बिना मास्क के एक स्थान से दुसरे स्थान तक सफ़र कर रहे है और साथ ही सामाजिक कार्यक्रम में अपनी भागीदारी दे रहे है अभी जहा कही जाये वहां मास्क जरूर लगावे और साथ ही अपनी भागीदारी जहा आवश्यक हो वही रखे।

**सच्चा स्वराज-** इस माह एक बार पुन: हम सब ने मिलकर जन जातीय स्वराज संगठनो की बैठको का आयोजन शुरू किया जिसमे देखा गया था की मई माह में एक सर्वे के आधार पर गाँवो में बच्चे अनाथ और बहुत से परिवार असहाय दिखे जिनको विभिन्न संगठनो के द्वारा देखा भी गया इसको हमारे सचिव महोदय श्री आदरणीय जयेश जी जोशी ने गंभीरता से समझा और इस विकट परिस्थिति में हर गाँव में अति गरीब जन तक जनजातीय स्वराज संगठन, ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति और सक्षम समूह की बहनो के माध्यम से 1000 राशन सामग्री आमजन तक पहुंचाई।

साथियों विगत माह में हमारे जनजातीय स्वराज संगठन पीपलखूंट के गाँवो में पानी की टंकियो का निर्माण करवाया गया था लेकिन विगत दो साल से ग्रामीणों को पेयजल नसीब नहीं हुआ.इस सम्बन्ध में ग्रामीण स्तर पर राजनितिक एवं प्रशासनिक कार्मिको से अनेक बार चर्चा की परन्तु परिणाम तक नहीं पहुँच सके। अंत में इस बार संगठन तक यह मसला गया और संगठन ने खंड स्तर पर अपनी बात को बेझिझक रखा परिणाम यह रहा की आज इसका अधूरा कार्य पुन: आरम्भ हुआ और संगठन को एक और सफलता हासिल हुई साथियों मेरा लिखने के पीछे मंशा यही है की क्यों ना हम सब मिलकर हमारी संगठनो की आयोजन स्वत: करे और हमारे स्तर पर ही आम जन या ग्राम विकास की रूपरेखा खण्ड अथवा जिले तक ले जाने में सक्षम हो जावे।

**सच्चा बचपन** – आप सभी जानते है की आपकी संस्थान विगत 15 वर्षों



से बच्चो के अधिकार को लेकर हमेशा सरकारी तंत्र के साथ बाल अधिकार कार्यक्रमों में कंधे से कंधा मिलकर कार्यरत है और हमेशा रहेगी.इस माह में आपके एवं हमारे प्रयास से ग्राम पंचायतो में बाल श्रम मुक्त की और अग्रसर है और इसी क्रम में हमने बच्चो की समस्या को सुलझाने के लिए हमारी अपनी चाइल्ड लाइन टीम के तहत 09 केस दर्ज करवाए ताकि सही वक्रत पर बच्चो को उनका हक मिल सके साथियों कोरोना काल में हमारे यहा हर गाँव में एक से दो व्यक्तियों का आकस्मिक निधन हुआ इस क्रम में आपके स्थानीय प्रयास एवं हमने मिलकर इन परिवारो के बच्चो को पालनहार योजना से जोड़ने के लिए सही समय पर मार्गदर्शन किया जिसका परिणाम हमारे लिए महत्व नहीं रहता पर इन परिवारों के बच्चो को सही समय में अपना अधिकार मिल जाए. साथियों मानो साइबर दुनिया ने आज की आधुनिक जीवन शैली, कंप्यूटर क्रांति, नेटवर्क की उपलब्धता, ऑनलाइन कार्यशैली, ऑनलाइन शिक्षा एवं कोरोना काल में हर कार्य ऑनलाइन होने से हमारा युवा वर्ग एवं बच्चे सब मोबाइल एवं लेटोपों मे व्यस्त है और कहा जाए तो आज उनका सबसे घनिष्ठ मित्र ऑनलाइन दुनिया हो गई है आज छोटे से छोटा बच्चा मोबाइल पर समस्त कंटेंट देखता है जो उसके लिए नहीं है इन सब कारणों से उसका शारीरिक, मानसिक, भवनात्मक रूप से विषमता और अपराधिक मानसिकता बच्चों में पैदा हो रही है.आज बच्चे बचपन खत्म होने से पहले युवाअवस्था की सोच बन गई है.अतः समय रहते हुई हमे बच्चो को शारीरिक एवं क्रांन्ती जानकारी उपलब्ध करानी ही होगी अन्यथा अपराध भी बढ़ेंगे और अपराधो का आकडा भी बढ़ेगा,युवा अपराध को रोकने हेतु संगठन,स्वयं सेवी संस्थान, प्रशासन को मिल-जुलकर कार्य करना होगा अपराध गति होने से पूर्व युवाओं को सही दिशा निर्देश देने के लिए कार्य करना होगा । तो साथियो आओ हम भी मिलकर मोबाइल की पड़ी लत से बच्चो को दूर रखे एवं सर्वांगीण विकास के लिए खेल मैदान की तरफ भेजे।

**सच्ची खेती** – इस माह हमारी सक्षम समूह की बहनो को खरीफ हेतु बीज प्रदान किया गया था ताकि एक बार और हम किसान परिवारों को देसी बीज मिल सके विगत वर्ष हमारे प्रयास रंग लाए और 3000 परिवार एक बार पुन: अपना देसी बीज इस खरीफ में उगाएंगे साथियों इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए इस बार 1900 परिवारों को पोषण बगिया हेतु सब्जी किट,1000 बहनो में मक्का,तुवर,हल्दी,अदरक के देसी बीज प्रदान किए गए उम्मीद एवं आशा है की खरीफ के अंत में जो भी ऊत्पदन रहेगा उससे आगामी वर्षों में हम और किसान बहने इसको उगाने में सक्षम हो जाएंगी इन सब बातो के पीछे कारण भी यह है की सच्ची खेती जो अलख विगत दो साल में लगी है जोकि हमारे पूर्वज इसको अच्छे से करते आ रहे थे बहनो एक समय में यूरिया बाजार में आया था तब हमारा फसल का उत्पादन मानो दौंग्ना आया सभी खुश थे की यह क्रम निरंतर चलता रहेगा और हम और फसल लेंगे पर परन्तु समय के साथ सब बदल गया जहा हमें की सिंचाई के लिए 04 पानी की आवश्यकता होती थी उसकी जगह अब 07 से 08 पानी मिलने के बाद भी उत्पादन 03 से 04 क्वि.तक सिमित रह गया है वक्त रहते आप नही सम्भले तो मिटटी को बंजर होने से कोई नहीं रोक सकता तो क्यों ना साथियो जैविक या पारंपरिक दूर तरीके से खेती करना शुरू करे ।

**अपनी बारी आने पर टीका जरूर लगवाए ..**

**हेमन्त आचार्य**

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई  
लीडर, घाटोल



### मानगढ़

**!! हेता वागड़ वासीयो ने जय गुरु !!**

समुदाय के मेरे सभी साथियों एवं वातें वाग्धारा नी के सभी पाठकों को मेरी ओर से जय गुरु । जैसा की आप सभी को विदित है की कोरोना का संकट अभी पूर्ण रूप से टला नहीं है और शायद ये भी संभावना मानी गई है की इसकी तीसरी लहर भी आ सकती है तो इसको ध्यान में रखते हुए मेरा समुदाय से निवेदन है की अपने एवं अपने परिवार का ध्यान रखे और जैसी हालत हमें गांवों की इस दूसरी लहर में देखने को मिली वैसा इस तीसरी लहर में न देखने को मिले । बारिश का मौसम लगभग इस वागड़ क्षेत्र में अपनी दस्तक दे चुका है और किसान अपना ध्यान वापस खेती की ओर लगा रहा है तो मेरा निवेदन है सभी किसान भाई बहनो से की वो मिश्रित खेती की तरफ ज्यादा जाये ताकि पिछले साल जो हमे अतिवृष्टि देखने को मिली वो दोबारा न हो और किसानो के पास पर्याप्त मात्रा में कुछ फसल बच पाए जिससे वो अपना जीवन व्यापन कर पाए क्यूकि यही इकलौता मौसम है जिसमे किसान अपनी खेती से अधिकतम उपज ले पता है और जिससे वो अपना साल भर का जीवन यापन करता है । कोरोना की तीसरी लहर एवं खरीफ की खेती को ध्यान में रखते हुए ही इस माह का हमारा कार्य किया गया और जिस तरह हम हर माह अपनी कार्यों का कुछ भाग आपके साथ साझा करते है उसी प्रकार इस बार भी हम कुछ प्रमुख गतिविधि आपके साथ साझा करेंगे जो इस माह मानागढ़ इकाई में संपन हुई ।

**बीज वितरण :** खरीफ के मौसम के आगमन को ध्यान में रखते हुए एवं किसानों की तंगी हालत को देखते हुए जो इस बार लॉकडाउन के कारण हुई, संस्था ने बीज वितरण करने का निर्णय लिया । संगठन के माध्यम से बैठकों में से से ये चर्चा निकल के आई की इस बार गांवों में लोगों के पास पैसों के बहुत कमी है साथ ही सरकार से भी इस बार उन्हें कोई ख़ास मदद उपलब्ध नहीं हुई है तो संगठन के लोगों का ये कहना था की अगर संस्था कुछ बीजों का प्रबंध करे तो किसानो को काफी मदद मिलेगी और कुछ वंचित परिवार जो की बिलकुल ही कठिन परिस्थिति में है उन्हें अगर ये बीज मिले तो उन्हें काफी फ़ायदा होगा । संगठनों की इस बात पे विचार करने के बाद संस्था ने कुछ बीजों का प्रबंध किया जिसमे देसी मक्का, तिल, तुअर, सब्जी बीज, चवला, हल्दी, अदरक आदि मौजूद थे। संगठन के माध्यम से ये बीज हमारी सक्षम समूह की महिला, संगठन के लोग, वंचित परिवारों एवं हमारे स्वराज मित्रों तक पहुंची और कुल

हमारी इकाई में 2500 परिवारों तक पहुंच पाया और लोग इससे काफी लाभान्वित हुए ।

**स्वास्थ्य किट का वितरण :** कोरोना महामारी की दूसरी लहर आने पर गांवों में समय पर स्वास्थ्य की जाँच करने पर काफी समस्या आई और गाँव में आशा कार्यकर्ताओं के पास कोरोना के लक्षण की जाँच करने के लिए पर्याप्त उपकरण भी नहीं थे जिस कारण गाँवों में लोगों के ऑक्सीजन स्तर एवं शरीर का तापमान लेने में काफी समस्या आई जिससे कोरोना संक्रमण और भी बढ़ गया । कोरोना की तीसरी लहर को ध्यान में रखते हुए संस्था ने संगठन के माध्यम से ये निर्णय लिया की कार्यक्षेत्र के हर गाँव की आशा को एक स्वास्थ्य किट दिया जाये जिसमे एक ओक्सी मीटर, थर्मो गन, मास्क उपलब्ध हो जिससे वो अंगली लहर के आने से पहले ही तैयार रहे और क्यूकि आशा कार्यकर्ता ही स्वास्थ्य को लेकर जमीनी स्तर पर कार्य करती है एवं आखिरी कड़ी है इसलिए उनकी सुरक्षा अहम् है ताकि वो आगे गाँव के स्वास्थ्य का ध्यान रख पाए । कार्यक्षेत्र के 276 गाँव की आशा को संस्था एवं संगठन द्वारा ये स्वास्थ्य किट उपलब्ध कराए गए।

**जरूरतमंद परिवारों को राशन किट वितरण :** इस बार लॉकडाउन के कारण लोगों को काफी समस्या आई और क्यूकि सरकार से भी इस बार किसी प्रकार की सहायता नहीं मिल पाई जिसकी वजह से लोगों की आर्थिक स्थिति में बहुत कमी आई एवं कुछ ऐसे परिवार जहाँ रोजगार का कोई साधन उपलब्ध नहीं था और पूरी तरह से वो दूसरों पर ही निर्भर था उन परिवार का जीवन यापन करना मुश्किल हो गया था । संस्था ने ये जरूरी समझा की ऐसे परिवारों को कुछ मद मिलनी चाहिए इसलिए संगठन के माध्यम से ऐसे परिवारों की सूची बनाई जो आश्रित एवं वंचित है जिसमे एकल विधवा महिला, शारीरिक एवं मानसिक विकलांग, अनाथ बच्चे आदि शामिल किये गए एवं संगठन के माध्यम से उन परिवारों को 1 महिना का राशन सामग्री किट उपलब्ध कराया गया । मंगद इकाई के कुल 900 वंचित परिवारों को ये राशन किट उलब्ध कार्य गया । आने वाले समय में जो कुछ प्रमुख गतिविधि हमलोग करेंगे उनमे से कुछ इस तरह है- सक्षम समूह की बैठके, दिए गए बीजों का अवलोकन, किसानो की स्थिति का डाटा लेना आदि ।

**रोहित सिन्ध**

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई

लीडर, आनन्दपुरी





## हरियाली अमावस्या (दिवासा)

हमारा देश पर्वों और त्योहारों का देश है । लोक संस्कृति में तो यहाँ तक कहा गया है की बारह महीने में तेरह त्यौहार आते हैं । यदि हम ध्यान से दृष्टि डाले तो प्रत्येक तिथि एक पर्व लेकर आती है । 365 दिन ही कोई न कोई तीज त्यौहार चलते हैं, कई बार एक ही तिथि को दो अलग-अलग त्यौहार एक साथ पड़ते हैं । इनमें प्रकृति और पुरुष के सनानी सम्बन्ध को कायम रखने के लिए भी पर्व मनाये जाते है । इसमें से सबसे महत्वपूर्ण पर्व है हरियाली अमावस्या ।

श्रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या को हरियाली अमावस्या के नाम से जाना जाता है । देश के कई भागों विशेषकर उत्तर भारत में इसे एक धार्मिक पर्व के साथ ही पर्यावरण संरक्षण के रूप में मनाया जाता है। श्रावण मास में महादेव के पूजन का विशेष महत्व है इसीलिए हरियाली अमावस्या पर विशेष तौर पर शिवजी का पूजन-अर्चन किया जाता है। यह अमावस्या पर्यावरण के संरक्षण के महत्व व आवश्यकता को भी प्रदर्शित करती है। इस दिन नदियों व जलाशयों के किनारे स्नान के बाद भगवान का पूजन-अर्चन करने के बाद शुभ मुहूर्त में वृक्षों को रोपा जाता है। इसके तहत शास्त्रों में विशेषकर आम, आंवला, पीपल, वटवृक्ष और नीम के पौधों को रोपने का विशेष महत्व बताया गया है। प्राचीय संस्कृति में प्राचीनकाल से पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है। पर्यावरण को संरक्षित करने की दृष्टि से ही पेड़-पौधों में ईश्वरीय रूप को स्थान देकर उनकी पूजा का विधान बताया गया है। जल में वरुण देवता की परिकल्पना कर नदियों व सरोवरों को स्वच्छ व पवित्र रखने की बात कही गई है। वायुमंडल की शुचिता के लिए वायु को देवता माना गया है। वेदों व ऋचाओं में इनके महत्व को बताया गया है। शास्त्रों में पृथ्वी, आकाश, जल, वनस्पति एवं औषधि को शांत रखने को कहा गया है। इन सबके पीछे मान्यता यह है कि इन्हें प्रदूषण से बचाया जाए। यदि ये सब संरक्षित व सुरक्षित होंगे तभी हमारा जीवन भी सुरक्षित व सुखी रह सकेगा। हरियाली अमावस्या का हमारे जीवन में अपना अलग ही महत्व हैं । सावन की फुहारों के साथ पर्यावरण का स्वागत करने के लिए हरियाली अमावस्या को हम एक पर्व की भांति मनाते हैं । यह त्योहर सावन में प्रकृति पर आई बहार की खुशियों को मनाने का एक महत्वपूर्ण पर्व है । इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को प्रकृति के करीब लाना है।

इस दिन विभिन्न स्थानों पर मेलों और पूजा पाठ का भी आयोजन किया जाता हैं । इस कृषि उत्सव को सभी समुदायों के लोग आपस में मिलकर मनाते हैं । एक दुसरे को गुड़ और धानी की प्रसाद देकर आने वाली मानसून ऋतु की शुभकामना देते हैं । इस दिन अपने हल और कृषि यंत्रो का पूजन करने की भी परंपरा हैं । इस दिन वृक्षारोपण का कार्य विशेष रूप से किया जाता हैं । वर्षों पुरानी परम्परा के निर्वहन के रूप में हरियाली अमावस्या के दिन एक नया पौधा लगाना शुभ माना जाता हैं । हरियाली अमावस्या के दिन सभी लोग वृक्ष पूजा करने की

प्रथा के अनुसार पीपल और तुलसी के पेड़ की पूजा करते हैं. हमारे धार्मिक ग्रंथों में सजीव और निर्जीव जीवों से पर्वत और पेड़ पौधों में भी ईश्वर का वास बताया जाता हैं । पीपल का सर्वगुणसंपन्न होने के साथ इसमे त्रिदेवों का वास भी माना जाता हैं । ठीक इसी तरह आंवले के वृक्ष में भगवान श्री लक्ष्मीनारायण का वास माना जाता हैं ।

आज सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण संरक्षण की हवा जोरों पर हैं । ऐसे में इस प्रकार के तीज त्योहारों को मनाने से हम पर्यावरण संरक्षण में बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं । अपने पर्यावरण की खातिर वर्षों से आ रही प्रथा को निभाने के लिए हम सबको एक पौधा जरूर लगाना चाहिए । हमारी लोक संस्कृति में पितरों को भी देवता माना गया है । हम परिवार में आने वाली हर परिस्थिति चाहे वह प्रसन्नता की हो या कोई विपत्ति की हम पितृ देवता का पूजन अर्चन करते है । जनमानस का यह मानना है कि उनके स्मरण मात्र से हमारे विपत्ति टल जायेगी। कई परिवारों में आज भी ये परंपरा है कि प्रतिदिन पितरों के नाम का सुबह शाम दिया जलाया जाता है और भोग लगाया जाता है । जिससे वो प्रसन्न रहते है और परिवार पर सदा उनकी कृपा बनी रहती है । भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा हैं कि वह स्वयं पितरों में प्रधान अर्चना हैं । हरियाली अमवस्या के दिन पौधरोपण से पितर भी तृप्त होते हैं, इस दिन पौधे लगाने से प्रकृति और पुरुष दोनों ही संतुष्ट होकर मनुष्य को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं। इसलिए इस दिन एक पौधा लगाना शुभ माना जाता है ।

हरियाली अमावस्या को लोकपर्व दिवासा के रूप में भी मनाया जाता है । पर्व को लोक परम्परा में उवो कहा जाता है । इसे पहला उवा माना गया है । दिवासे से ही हमारे पर्वों और त्योहारों की शुरुआत होती है । लोक परंपरा में बच्चों में संस्कार डालने के लिए अच्छी अच्छी आदते बताने के लिए माता पिता गीत के रूप में गाकर भी बताते है। एक ऐसा ही बाल गीत है जो बालकों को जानकारी के साथ साथ संस्कार निरूपण का कार्य भी करता है ।

**पेलो उवो दिवासो ने बीजो राकड़ी , बोदी वाते सोडावा नी लई लो आकड़ी ।**

जिसका अर्थ ये है कि हमार ये पहला पर्व दिवासा है और दूसरा राकड़ी (रक्षाबंधन ) है। आज से हमें तमाम बोदी वाते ( गन्दी आदते ) छोड़ने का संकल्प ( आकड़ी ) ले लेना है । इस गीत से हमें हमारी समृद्ध लोक संस्कृति और परंपरा की जानकारी मिलती है । लोक परम्पराएं लोक से जुड़ी होती है उनका निर्वहन सदा परिवार और समाज की सामाजिक स्थिति को संवारने के लिए किया जाता है । दिवासे के पर्व पर बीते वर्ष में जिन परिवारों में उनके परिजनों का देहांत हो गया है, उन परिवारों में उनके इष्ट, परिजन और सगे सम्बन्धी मिलने जाते है ( सोग निवारण के लिए ) । जिससे शोक संतप्त परिवार को सांत्वना मिलती है । उसे लगता है कि संकट की

इस घड़ी में समाज हमारे साथ है । धीरे धीरे ऐसे परिवार समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित हो जाते है । हरीयाली अमावस्या के दिन ये मान्यता भी है की इस दिन पीपल की पूजा करनी चाहिए और मालपुओं का भोग लगाना चाहिए । इस परंपरा को हमने अपने जीवन में इस तरह रचा बसा लिया कि दिवासे की दिन सभी परिवारों में मालपुओं का व्यंजन बनाया जाता है और श्रद्धा एवं अस्था भाव से बड़े चाव से खाया जाता है ।

इस प्रकार हरियाली अमावस्या का लोक संस्कृति में बड़ा गहरा नाता है । भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों में यह भिन्न भिन्न मान्यताओं के साथ मनाया जता है । हरियाली अमावस्या के दिन उत्तर भारत में मथुरा और वृंदावन के खासकर बांके बिहारी मंदिर एवं द्वारकाधिश मंदिर विशेष पूजा और दर्शन के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं । कई अन्य शिव मन्दिरों में भी लोग अमावस्या के दिन दर्शन और पवित्र स्नान करने जाते हैं । पंजाब, मध्यप्रदेश के मालवा, राजस्थान, गुजरात ,उत्तरप्रदेश और हरियाणा आदि राज्यों में नए वर्ष की हरियाली के आगमन के रूप में इस पर्व को मनाते हैं । इस दिन किसान आने वाले वर्ष में कृषि कैसी होगी इनका अनुमान लगाते हैं, शगुन करते हैं । मूल रूप से प्रकृति संरक्षण का यह पर्व हमें धरती के श्रृंगार का पुनीत सन्देश और पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन के प्रति हमारी प्रतिबद्धताओं को याद दिलाता है । हरियाली अमावस्या के इस पावन पर्व पर हम ये संकल्प करे कि हम जन जन की जीवनदायिनी धरती मां का श्रृंगार करे और देश समाज के प्रति अपने दायित्वों को निभाए। आज पर्यावरण की जो स्थिति है उसके लिए ये गीत हम सबको प्रेरणा प्रदान करेगा ।

धरती धुल उड़ाती है, वो देखो हमकों चिढ़ाती है
आओं करे मिल के श्रृंगार इसका, ये जन जन की है जिंदगानी
\*\*\*\*\*

जब से था धानी का अंचल हरा कोई न भूखा और प्यासा मरा
जिसने किया प्यार धरती से देखो पाई नई जिंदगानी
आओं करे मिल के श्रृंगार इसका ये जन जन की है जिंदगानी
\*\*\*\*\*

अब देखो धानी कैसी विरानी, हम छाया को तरसे नहीं मिलता पानी
जिसने यूँ नोचा है धानी का आँचल, कैसे जियेगा बिन पानी
आओं करे मिल के श्रृंगार इसका, ये जन जन की है जिंदगानी
\*\*\*\*\*

धरती धुल उड़ाती है, वो देखो हमकों चिढ़ाती है
आओं करे मिल के श्रृंगार इसका, ये जन जन की है जिंदगानी
\*\*\*\*\*

**सतीश आचार्य**

## बच्चों और किशोरों में गठिया है खतरनाक, ऐसे रखें ध्यान

दुनिया भर में जुवेनाइल आर्थराइटिस ( किशोरों और बच्चों में गठिया ) के मामले बढ़ते जा रहे हैं। दु:खद है कि अभी तक चिकित्सक और शोधकर्ता इसका कारण नहीं जान पाए हैं। इसलिए इसके बारे में जागरूकता फैलाने के लिए जुलाई को जुवेनाइल आर्थराइटिस अवयरनेस मंथ घोषित किया गया है। जुवेनाइल आर्थराइटिस को किशोर रूमाटाइड आर्थराइटिस के रूप में भी जाना जाता है और दोनों ही शब्दों का परस्पर विनिमय किया जाता है। जुवेनाइल आर्थराइटिस मूल रूप से एक पुरानी, गैर संक्रामक, सूजन और अंटीइन्फ़्लू संयुक्त बीमारी है, अर्थात शरीर के भीतर मौजूद वह प्रतिरक्षा प्रणाली जो बाहरी बैक्टीरिया के आक्रमण से बचाती है। इसके होने के कारण और उपचार की संभावना भी शरीर के भीतर मौजूद प्रतिरक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। जुवेनाइल आर्थराइटिस मुख्य रूप से बच्चों और किशोरों को प्रभावित करता है।लगभग 6 महीने से 18 वर्ष तक के हर 250 बच्चों या किशोरों में से एक बच्चा या किशोर किसी न किसी प्रकार की गठिया ( आर्थराइटिस )से पीड़ित है। बच्चों को प्रभावित करने वाली गठिया लगभग 16 प्रकार की होती है, परन्तु इनमें से मुख्य रूप से जुवेनाइल आर्थराइटिस, मुख्य रूप से बच्चों और किशोरों को प्रभावित करते हैं। जुवेनाइल आर्थराइटिस से प्रभावित लगभग 10 प्रतिशत बच्चों में पाया जाता है। हर 1000 बच्चों में से एक बच्चा इससे प्रभावित होता है। भारत में लगभग 15 लाख बच्चे इससे पीड़ित हैं। यह रोग शरीर के रोग-प्रतिरोधक तंत्र (इम्यून सिस्टम) में विकार आने से उत्पन्न होता है। लगभग 60 प्रतिशत प्रभावित बच्चों में इसका सीधा संबंध माइक्रोप्लाज्मा



नामक जीवाणु से माना जाता है।आंकड़ों की माने तो लगभग 2 प्रतिशत बच्चे जुवेनाइल आर्थराइटिस के शिकार होते हैं। बच्चों को होने वाले इस गठिया रोग को जानना बेहद जरूरी है। अक्सर बचपन में कुछ गलतियों को नजरअंदाज करने पर गंभीर बीमारी के शिकार हो जाते हैं। जुवेनाइल आर्थराइटिस भी इसी में से एक है। अगर बच्चा जोड़ों

में दर्द की शिकायत करता है तो इसे कभी भी नजरअंदाज न करें। एक्सपर्ट्स की माने तो अगर बच्चा जोड़ों में दर्द की शिकायत करता है तो उसे तत्काल गठिया रोग विशेषज्ञ को दिखाना चाहिए। इसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं जिसकी वजह से बच्चे विकलांग हो जाते हैं। अगर समय पर इस परेशानी को समझ लिया जाए तो बच्चे का जीवन विकलांगता से बचाया जा सकता है। भारत में ज्यादातर हड्डी रोगों के लिए एक ही तरह के चिकित्सक मौजूद हैं। जुवेनाइल आर्थराइटिस का इलाज कायदे से गठिया रोग विशेषज्ञ को करना होता है लेकिन यहां ज्यादातर लोग आर्थोपेडिक सर्जन से ही इलाज कराते हैं । भारत में गठिया रोग विशेषज्ञ की कमी भी इसका एक कारण है।अगर समय रहते जुवेनाइल अर्थराइटिस का इलाज नहीं होता है तो बच्चा विकलांग हो सकता है।

**जुवेनाइल आर्थराइटिस से बचाव**

इससे बचाव के लिए बच्चों को प्रोटीन, विटामिनस और मिनरल्स से भरा आहार देना चाहिए। बच्चों के खाने में हरी सब्जियां, फल, ड्राई फ्रूट्स और सलाद शामिल करें। बच्चों को तेल, मसाले से बने बाजार के फूड्स, तले-भुने फूड्स और जंक फूड्स खाने से रोकें। इसके अलावा बच्चों को रोज एक्सरसाइज और खेल-कूद के लिए प्रेरित करें। व्यायाम से पहले थोड़ी स्ट्रेचिंग जरूरी है। गेम के लिए आउटडोर गेम को ज्यादा महत्व दें क्योंकि आजकल के बच्चों में घर के अंदर रहने और मोबाइल, लैपटॉप पर गेम खेलने की प्रवृत्ति ज्यादा आ गई है जो स्वास्थ्य के लिहाज से खतरनाक है।

**कारण**

अभी तक इसका कोई स्पष्ट कारण सामने नहीं आ पाया है। शोधकर्ताओं ने इसे अज्ञात बीमारी की संज्ञा दी है, जिसका कारण उन्हें अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है। इसके लिए कुछ आनुवांशिक, कुछ संक्रमण तो कुछ पर्यावरणीय कारण जिम्मे दार हैं।

**लक्षण**

बीमारी की जानकारी न होने की वजह से लोगों को और भी परेशानी उठानी पड़ती है। बच्चों में होने वाले जुवेनाइल अर्थराइटिस की पहचान सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। -एक या एक से अधिक जोड़ों में दर्द और सूजन का होना। -बुखार आना। -आंखों में सूजन और लालिमा का होना। -उपयुक्त लक्षण छह हफ्ते से लेकर तीन महीने तक कायम रह सकते हैं। -रक्त में हीमोग्लोबिन का कम होना और व्हाइट ब्लड सेल्स ज्यादा पायी जाती हैं।

अगर आपके बच्चे में इस तरह के कोई भी लक्षण दिखाई दें तो उसे तत्काल गठिया रोग विशेषज्ञ के पास ले जाएं।

**एलोपैथिक उपचार**

• दर्द नाशक दवाइयों का उपयोग दर्द और सूजन के इलाज के लिए किया

जाता है।

• धीरे-धीरे एंटी-रूमेटिक ड्रग्स (साई) का उपयोग समय के साथ दर्द और सूजन के इलाज के लिए किया जाता है और आमतौर पर इसके काम करने में कई सप्ताह या अधिक समय लगता है।

• कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स का उपयोग दर्द और सूजन के इलाज के लिए भी किया



जाता है। कभी-कभी, किसी भी अन्य उपचार की कोशिश करने से पहले, स्टेरॉयड को प्रभावित संयुक्त में इंजेक्शन के रूप में दिया जाता है।
• एंटीमेटाबॉलिटिस एक प्रकार की दवा है जो एक आर्थराइटिस से होने वाले नुकसान को तुरंत नियंत्रण में करने के लिए प्रयोग की जाती है। घरेलू उपचारों से इसकी परेशानी को कर सकते हैं कंट्रोल
• **नींबू का रस** – नींबू में बहुत से एंटीवायरल, एंटी जीवाणु रोधक, एंटी फंगल इत्यादि गुण होते है। गठिया के दर्द में नींबू का रस का सेवन करना चाहिए।
• **बथुवा का रस** – बथुवा एक तरह की हरी पत्ती वाली सब्जी है। बथुवा में बहुत तरह के विटामिन और कैल्शियम होते है। जो मांसपेशियों के लिए बहुत अच्छा रहता है। दर्द से राहत पाने के लिए बथुवा का रस का सेवन करना चाहिए। यह बहुत ही अच्छा घरेलू उपचार है।
• **एलोवेरा जेल** – एलोवेरा जेल को बहुत से रोगों का औषधी माना जाता है। एलोवेरा जेल का उपयोग आयुर्वेदिक दवाओं में भी किया जाता है। एलोवेरा को काटकर जेल निकालें व दर्द के स्थान पर लगा लें । इससे मरीज को बहुत आराम मिलेगा।
• **हरी पत्तेदार सब्जी** – जोड़ो के दर्द में हरी सब्जियों का सेवन रोजाना करना चाहिए। हरी सब्जियों में बहुत से पौष्टिक तत्व और खनिज होते है। जो शरीर को पूर्ण रूप से पोषक तत्व देते है। जोड़ो के दर्द से राहत दिलाते है। क्योंकि

### कोरोना की संभावित तीसरी लहर को लेकर जन जागरूकता

वागधारा संस्था में संचालित वागड़ रेडियो 90.8 एफ.एम. के द्वारा समय-समय पर कार्यक्रमों के माध्यम से समुदाय को जागरूक किया जा रहा है । इसी के चलते बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष महोदया संगीता बेनीवाल जी ने वागड़ रेडियो के माध्यम से समुदाय को बताया कि संभावित तीसरी लहर को लेकर प्रशासन द्वारा किस तरह की व्यवस्थाएं की जा रही है, साथ ही समुदाय को उससे बचने के लिए क्या करना चाहिए और जिन बच्चों के माता-पिता या माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु हो गई है तो उन्हें पालनहार योजना व पेंशन योजना से जोड़ा जाए ।

इसी कड़ी में 12 जून को विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर सीधा प्रसारण कार्यक्रम में बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष श्रीमान दिलीप रोक्ड़िया जी से बातचीत की गई जिसमें उन्होंने बताया कि कोरोना के चलते जिनके माता पिता की मृत्यु हो गई है उन्हें पालनहार योजना से जोड़कर लाभ दिलवाया जाए ,साथ ही जो बच्चे माता-पिता के साथ पलायन कर जाते हैं और शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, उन्हें भी शिक्षा से जोड़ा जाए तथा बाल श्रम पर रोक लगाई जाए जहां भी बालश्रम करता बालक या बालिका दिखाई दे तुरंत उसकी सूचना दी जाए ताकि हम देश को बाल श्रम मुक्त बना सके और इसी के चलते चाइल्ड लाइन 1098 के सदस्य श्रीमान कमलेश बुनकर ने 1098 की पूरी जानकारी दी साथ ही बाल कल्याण समिति के सदस्य ने भी इस बारे में विस्तृत जानकारी दी । वहीं 12 जून को ही विश्व संगीत दिवस पर श्रीमति रिया उपाध्याय से बातचीत की जिसमें उन्होंने बताया कि संगीत हमारे जीवन में कितना महत्व है और किस तरह से संगीत में युवा अपना करियर बना सकते हैं साथ ही संगीत से तत्सव को भी कम किया जा सकता है ।

इसके साथ ही 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर वरिष्ठ आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. नवीन उपाध्याय ने योग का महत्व बताते हुए कहा कि बच्चों के लिए योग बहुत महत्वपूर्ण है साथ ही इस कोरोना काल में योग कितना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है इसकी जानकारी दी । वही सीधा प्रसारण कार्यक्रम में जुड़े बाल कल्याण समिति के सदस्य श्रीमान पुष्पेंद्र जी पंड्या जिन्होंने कोरोना काल में योग के महत्वपूर्ण कारको को बताते हुए योग और प्राणायाम के फायदों की जानकारी दी ।

इन सभी के साथ यूनिसेफ के तत्वाधान में वागड़ रेडियो द्वारा कई जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनमें कोरोना के चलते लैंगिक असमानता ,शिक्षा का जोखिम,हिंसा ,पलायन आदि सभी को रोकने के लिए कार्यक्रमों का प्रसारण समुदाय और विषय विशेषज्ञों को जोड़कर किया जा रहा है **छाया जमड़ा** - प्रभाी कृषि एवं जनजातीय, स्वराज केंद्र



हरी पत्तेदार सब्जिया शरीर को कैल्शियम प्रदान करती है, जो की हड्डियों के लिए बहुत लाभदायक होते है।

• **अदरक**-हड्डियों की समस्या को दूर करने के लिए अदरक का उपयोग जरूर करना चाहिए।

• **लहसुन का उपयोग** – लहसुन रक्त को साफ़ करने में बहुत लाभदायक होता है। लहसुन की दो या चार कलियों को खाना चाहिए। इससे दर्द से आराम मिलता है। इसके अलावा लहसुन की कालियों को राई या जैतून के तेल में गर्म करके अच्छे से जोड़ो की मालिश करें। ऐसा कम से कम दो हफ्ते करे। इससे गठिया का दर्द जल्द ही दूर हो जायेगा। इससे शरीर को किसी तरह का नुकसान नहीं होता है।

• **अश्वगंधा का चूर्ण** – अश्वगंधा प्राकृतिक रूप प्रसिद्ध औषधीय है। जो सभी तरह के दर्द के लिए बहुत फायदेमंद होता है। गठिया के दर्द को दूर करने में लिए अश्वगंधा का चूर्ण का सेवन करना चाहिए। अश्वगंधा के चूर्ण को पानी में मिलाकर सुबह और शाम को पीना चाहिए। इससे दर्द से राहत जल्दी मिलता है।

• **अरंडी का तेल** – अरंडी का तेल से जोड़ो की अच्छे से मालिश करना चाहिए। लगातार दो हफ्तों तक मालिश करने से गठिया के दर्द से राहत मिलती है। अरंडी के तेल में प्राकृतिक गुण होते है। जो दर्द को अवशोषित करता है।

• **आलू का रस** – आलू का रस का सेवन गठिया के दर्द को दूर करने में मदद मिलता है। आलू के रस का सेवन करने से गठिया के मरीजों के लिए लाभदायक रहता है। आलू स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होता है।

• गिलोय- इसमें सूजन को कम करने के साथ-साथ गठिया विरोधी गुण भी होते हैं जो कि गठिया और जोड़ों में दर्द सहित इसके कई लक्षणों का इलाज करते हैं। ध्यान रखें गिलोय पांच साल की उम्र या इससे ऊपर के बच्चों के लिए सुरक्षित है।

गठिया के रोगियों को क्या खाना चाहिए और क्या नहीं
• हर दिन सेब खाएं • रोज 3 लीटर पानी पिएं • अलसी के बीज खाएं • विटामिन-सी का सेवन • बहुत ठंडा खाने से बचें • अधिक प्रोटीन से बचें • मछली और अखरोट से दूर रहें • मूंग की दाल, खड़ी या फ्रिज में रखी हुई दही, खट्टी और ठंडी छाछ इसके साथ ही आइसक्रीम, कुल्फी और बर्फ से तैयार चीजों का कम से कम सेवन करें।

इलाज द्वारा इस रोग पर इस हद तक काबू पाना है कि वह बच्चे की पढ़ाई या रोजमर्रा की जिंदगी में बाधा न बने जो अपने आप में एक चुनौती है। इसीलिए बच्चों में इस रोग के लक्षण दिखाते ही तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर चिकित्सक से संपर्क करें।

**राजेश्वर शिरन**

सीनियर प्रोग्राम फैसिलिटेटर
वाग्धारा

### सफलता की कहानी

। और विशेष निवेदन किया की इन जनजातीय क्षेत्र में पलायन होते है और लॉकडाउन के दौरान रोजगार प्रभावित हुए है जिससे यहाँ के लोगों को मनरेगा के तहत रोजगार के रूप में सहायता मिले । इसके बाद हमारे गाँवो में मनरेगा मजदूरी समय पर नहीं मिल रही थी , तब जनजातीय स्वराज संगठन के माध्यम से तहसीलदार महोदय को ज्ञापन देकर निवेदन दिया । इसके बाद अनुमानित 1000 परिवारों को सही समय पर उनकी मजदूरी मिली और उन परिवारों की आजीविका बेहतर हुई । मानसून के दौरान हुई भारी बारिश से वर्ष 2019 में हमारे फसलों को भारी नुकसान हुआ था और जिससे उत्पादन में कमी आने से परिवारों को आजीविका चलाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा । हमने संगठन के माध्यम से माननीय जिला अधिकारी महोदय बाँसवाड़ा को फसल खराबे का ज्ञापन दिया । इसके बाद कलेक्टर महोदय ने आदेश निमित्त करके हमारे प्रभाग के पटवारी को पंचनामा करके उचित मुआवजा देने का आदेश दिया । जिससे तत्करीबन 3000 परिवार लाभान्वित हुए । सरकारी योजना मंत्रया में लाभान्वित करने हेतु संगठन ने 5000 परिवारों का आवेदन करवाया । कोरोना के विकराल रूप से सभी कार्य प्रभावित हुए और गाँवों में भी इस महामारी का प्रकोप बढ़ता गया । एवं कोरोना के प्रभाव को रोकने हेतु टीकाकरण बहुत आवश्यक है । टीकाकरण की गलत प्रतित्यों को दूर करने हेतु मैंने लोगों को टीकाकरण के लिए प्रेरित किया । इसमें पहले मैंने स्वयं का कोरोना का टीका लगवाया । उसके बाद 13 लोगों को सरकारी स्वास्थ्य केंद्र ले जाकर टीकाकरण करवाया और अभी भी मैं अपने संगठन के माध्यम से हमारी मासिक बैठक और गाँव चौपाल में टीकाकरण के लिए प्रेरित करने का

कार्य निरंतर करता हूँ ।

वाग्धारा द्वारा गठित जनजातीय स्वराज संगठन के माध्यम से न केवल हमारी समस्याओं के समाधान का प्रयास हो रहा है बल्कि हमारी आजीविका बढाने हेतु भी सच्ची जैविक खेती के माध्यम से लोग आत्मनिर्भर के ऊपर परिक्रमण कर रहे है ।

यह सब हमारे जनजातीय स्वराज संगठन के माध्यम से हो रहा है और आगे निरंतर प्रयास करते रहेंगे । इसमें वाग्धारा संस्था ने समय-समय पर प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन दिया । जिसके लिए मैं आभार व्यक्त करता हूँ ।





**वागड़ रेडियो 90.8 FM**

**वाग्धारा, कुपड़ा**



**अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-**

**वागड़ रेडियो 90.8 FM**, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001

**फोन नम्बर है - 9460051234**

**ई-मेल आईडी -radio@vaagdharma.org**

**यह**

**“वातें वाग्धारा नी”**

**केवल**

**आंतरिक**

**प्रसारण है ।**

••••••••••••••••••••
। मार्गदर्शक : **दीपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार**
। मुख्य संकलक : **परमेश पाटीदार**
। सहसंकलक : **जागृती भट्ट**
। ••••••••••••••••••••